योगदा आश्रम में शरद संगम में ईश्वरानुभूति की बही बयार...

संगम में 26 राज्य व 20 देशों के अनुयायियों ने लिया हिस्सा

सीके मंडल

शरद संगम में जो स्वर्ग का अनुभव हो रहा है, या जो स्वर्ग का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं, इस स्वर्ग को आप अपने घर में भी महसूस करें और इस एहसास को अपने घर तक ले जाये, क्योंकि ये आनन्द, ये ईश्वरानुभूति ही, मनुष्य को परम आनन्द की ओर ले जाती हैं। ये बातें रांची स्थित योगदा आश्रम में आयोजित शरद संगम के अंतिम दिन समापन समारोह में योगदा सत्संग आश्रम के स्वामी स्मरणानन्द ने कही। उन्होंने मुख्य पंडाल में देश-विदेश से आये भक्तों को संबोधित करते हुए कहा, ये शरद संगम दरअसल भक्तों द्वारा, भक्तों के लिए, भक्तों को समर्पित रहा है, जिसमें गुरुजी परमहंस योगानन्द जी ने अपने स्नेहाशीष की वर्षा की, जिससे लोगों को स्वर्गिक आनंद प्राप्त हुआ।

उन्होंने सभी से कहा कि आप ध्यान को, सदा के लिए अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल कर लें, निरन्तर इसका अभ्यास करते रहे, कभी समस्या आएं तो उन समस्याओं से घबराएं नहीं, उन समस्याओं के बीच भी खुद को एडजस्ट करना सीखें आनन्द को महसूस करते रहे। हो सके तो सामूहिक ध्यान पर विशेष ध्यान दें, इसे विज्यूलाइज्ड करें, ये न भूलें हमारे साथ गुरुजी का आशीर्वाद हैं जो हमें निरन्तर उर्जान्वित करते रहते हैं। हमेशा याद रखें कि गुरुजी के आगे संपूर्ण समर्पण ही, हमें ईश्वरानुभूति की ओर ले जायेगा, क्योंकि वे ही हमें हर प्रकार से संरक्षित रखते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि सिर्फ ईश्वर ही हमें हर प्रकार से सुरक्षित, संरक्षित और प्रेम आनन्द से भर सकते हैं, और ये तभी संभव है, जब गुरु कृपा हो, गुरु की कृपा आप सब पर हो चुकी है। तभी तो आपने आनंद को महसूस किया है, इसे आप अपने घर ले जाएं, प्रसन्न रहे, सबको प्रसन्न रखें, ध्यान हमेशा करते रहे, और फिर आप पायेंगे कि आपने वह पा लिया, जिसकी प्रत्येक जीवात्मा को आवश्यकता होती है।

लांस एंजेलिस से स्वामी चिदानंद ने ऊँ के विभिन्न पहलुओं से भक्तों को साक्षात्कार कराया

शरद संगम के प्रथम दिन बड़ी संख्या में रांची के योगदा सत्संग आश्रम में पधारे। देश-दुनिया के भक्तों पर अपना आशीर्वाद लूटाते लांस एंजिल्स से स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ये बहुत ही सुंदर मौका है। गुरु की कृपा से आप सभी रांची के योगदा सत्संग आश्रम में एकत्रित हैं, ईश्वर और गुरु की आप सब पर बहुत बड़ी कृपा है, इसलिए आप सभी ह्रदय का द्वार खोलकर इस प्रेम व आनन्द का स्वागत करें। गुरुओं का आशीर्वाद आपके साथ है, इस आशीर्वाद को अपने ह्रदय में धारण करें, क्योंकि इसी से कल्याण होना है। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि इस पवित्र मौके पर वे भी उनके साथ है, ये अलग बात है कि शरीर वहां नहीं है, पर आत्मा की तरंगे वहीं पर हैं, उनका आशीर्वाद ईश्वरीय कृपा से आकाश मार्ग से होता हुआ, आप सभी पर बरस रहा है।

स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ऊं के स्पन्दन को, उसकी ध्वनियों को, अनुभवों को महसूस करें, क्योंकि ऊं के तीन पहलू है। एक-सृष्टि, दूसरा-स्थिति और तीसरा-विलय। जब हम ध्यान, प्रेम की ओम् प्रविधि द्वारा उस परम पिता परमेश्वर, उस दिव्य प्रकाश के साथ स्वयं को एकाकार करते हैं यो यह स्थिति सृष्टि की होती है। इसके द्वारा आप जो चाहे, ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं, आप प्रार्थना के द्वारा अपनी बात ईश्वर तक पहुंचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि ध्यान से उठकर, दैनिक जीवन के कार्यों में भी उक्त प्रकाश का सदुपयोग करें, क्योंकि उक्त प्रकाश से ही सब कुछ संचालित होता है, इसलिए उस प्रकाश को अपने साथ रख, उस प्रकाश से ही स्वयं को आलोकित करने हुए अपने दैनिन्दिनी कार्य को दिव्य बनाएं, तथा अपने अंदर की बुराइयों को, कमियों को, प्रकाश रुपी अग्नि में जलाने के लिए, भस्मीभूत करने के लिए सदैव तैयार रहे।

उन्होंने कहा कि याद रखे, ईश्वर और गुरु में कोई अन्तर नहीं, ध्यान की अवस्था में गुरु ऊं के ही मूर्त्तरुप है, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें ऐसे गुरु मिले, जिन्होंने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा, हमेशा मेरा साथ दिया। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि जब आप शरद संगम में आये और जब आप यहां से जायेंगे, तो जिस प्रकाश का आपने अनुभव किया, स्पन्दन महसूस किया, उस प्रकाश से स्वयं तथा दूसरे के अंधकार को रोशन करें। जो भी हमारे जीवन में आये, उसे उस प्रकाश से भरने की कोशिश करें, कोई अछूता नहीं रह जाये, सब में इसे फैलाएं, उन्होंने कहा कि एक विचार और आशीर्वाद के रुप में वे सबके साथ हैं, ईश्वरीय कृपा रही तो अगले वर्ष शरद संगम में वे सभी के साथ अवश्य उपस्थित होंगे।

जीवन में प्रत्येक परिस्थितियों में ईश्वर व गुरु पर विश्वास जरुरी

शरद संगम के दूसरे दिन प्रार्थना जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर एवं गुरु में विश्वास रखना विषय पर बोलते हुए स्वामी नित्यानन्द ने योगदा से जुड़े भक्तों को कहा, ज्यादातर देखने में आया है कि जब हम अपनी कोशिशों से हार जाते हैं तब प्रार्थना पर ध्यान देते हैं, पहले हम अपने बुद्धिबल, धनबल तथा बाहुबल से उन हर चीजों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, जो पाना चाहते हैं और जब नहीं मिली तो हारे को हरिनाम के आधार पर भगवान के शरण में चले जाते हैं, और ईश्वर ऐसे है कि सब कुछ जानते हुए भी हमें वो हर चीज प्रदान करते हैं, जिसकी हम आशा रखते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान से जो भी कुछ मांगना हो, मांगने के पहले सोच लीजिये, वहीं मांगिये, जो ईश्वर आपको सहर्ष प्रदान कर दें, यही नहीं दूसरों को जिससे नुकसान पहुंचता है, ऐसी मांग कभी भी ईश्वर के समक्ष मत रखिये, क्योंकि ईश्वर को ये पसंद नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि ईश्वर से जब भी मांगे तो अधिकार के साथ मांगे, क्योंकि आप ईश्वर की संतान है, जैसे कोई भी माता-पिता अपनी संतान को दुखी नहीं देख सकता, उसी प्रकार ईश्वर अपनी संतानों को दुखी नहीं देख सकते। कभी भी भिक्षुक की तरह नहीं मांगे, क्योंकि अगर आप भिक्षुक की तरह मांगेगे तो फिर आपको भिक्षुक की तरह ही आपको प्राप्त होगा। स्वामी नित्यानन्द ने यह भी कहा कि कुछ मांगने से अच्छा है कि ईश्वर को ईश्वर से ही मांग लिया जाये। स्वामी नित्यानन्द ने कहा कि प्रार्थना हमेशा शांत होकर, गहरा ध्यान कर, जिसमें आप ऊं की ध्वनि सुन सके, आनन्द का अनुभव कर सकें, तभी करें, इसी से आपको लाभ भी होगा, बाकी जैसे-तैसे प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं। यहीं नहीं प्रार्थना करते समय, ईश्वर को भी जिम्मेदार बनाएं ताकि जो कुछ प्राप्त हो, उसमें लाभ सुनिश्चित रहें, क्योंकि जिम्मेदार जब ईश्वर बनेंगे तो वे देखेंगे कि जो भक्त मांग रहा है, वह उसके हित में है या नहीं, तभी प्रदान करेंगे।

उन्होंने यह भी कहा कि ईश्वर एक है, पर उनके रुप अनेक है, जिन्हें जो रुप पसंद आता है, उसे ही स्वीकार करते है, इसलिए अगर आपको कुछ भी प्राप्त करना हो, तो आप उन्हीं ईश्वर से प्रार्थना करें, या मांगे, जिन्हें आप सर्वाधिक चाहते हैं, या उनका ध्यान करते हैं। उन्होंने कहा कि स्वयं को कभी पापी नहीं समझे, क्योंकि आप शरीर नहीं, बल्कि आत्मा है।

आत्मा परमात्मा की ही एक अंश है, इसलिए आप कभी पापी नहीं हो सकते, अच्छा रहेगा कि जिस कारण से आप स्वयं को पापी समझते है, उस कारण को ही सदा के लिए समाप्त कर दें यानी बुराइयों से खुद को अलग कर लें।

साधना और ध्यान में एकाग्रता के लिए गुरु की कृपा होना आवश्यक

शरद संगम के तीसरे दिन स्वामी नित्यानन्द ने साधना और ध्यान से कैसे हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं, इस संबंध में अपने अनुभवों को भक्तों के साथ साझा किया। उनका कहना था कि ध्यान का मतलब ही है कि भगवान के सिवा दूसरा का ध्यान नहीं करना, और जिसने इस ध्यान को साधना का मार्ग बना दिया, तो समझ लीजिये, उसका कल्याण हो गया, उसे सफलता मिलनी सुनिश्चित है, और भगवान का ध्यान हो ही जाये, ये कोई जरुरी भी नहीं, क्योंकि हमलोग जन्म-जन्मातर से इच्छाओं के वशीभूत होकर, ध्यान नहीं कर पाते, पर आप लोग भाग्यशाली है, जिन पर गुरु की कृपा है, मन को एकाग्र करिये, मन में खुद को मत भटकाइये और जो योगदा से जुड़े गुरु आपका मार्गदर्शन कर रहे हैं, उस पर चलते चले जाइये। उन्होंने कहा कि जिस क्रिया योग का गीता में उल्लेख हुआ है। वहीं क्रिया योग को सरल भाषा में अपने गुरु जी ने हम सबके सामने लाकर पुनः प्रकट कर दिया, इसे समझिये और मोक्ष प्राप्त कर लीजिये, बंधन से मुक्त हो जाइये। उन्होंने कहा कि जिस किसी ने गुरु के साथ अन्तरसम्पर्क बनाये रखा, गुरुजी के बताये पाठ का अनुसरण किया, गुरुओं पर भरोसा रखा, उसे सफलता मिली, क्योंकि सच्चे गुरु हमेशा ईश्वर के समान है और वे अपने भक्तों पर कृपा लुटाते रहते हैं। ब्रह्मचारी धैर्यानन्द ने विचारों की परिवर्तनकारी शक्ति पर अपनी बातें रखी, उनका कहना था कि आप यह जान लें कि जीवन का लक्ष्य ईश्वर को पाना है, और मनुष्य शरीर, मन और आत्मा के वशीभूत हैं, हम मन के माध्यम से ही आत्मा को जानते हैं, जो आत्मा आनन्द का स्रोत है। उन्होंने बताया कि हमारी सारी बिमारियों की जड़ मन है, यहीं हमें स्थिर नहीं रहने देता, यहीं हमारे अंदर के परिवर्तनकारी शक्ति को रोकने में मुख्य भूमिका का निर्वहण करता है, जबकि मस्तिष्क में मन और बुद्धि दोनों का वास है, मन कौरवों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बुद्धि पांडवों का। मन बराबर कहेगा, ये नहीं हो सकता, हम कर नहीं सकते, पर बुद्धि हमेशा कहती है कि हम ऐसा कर सकते हैं, हमारे से कुछ भी असंभव नहीं। धैर्यानन्द ने कहा कि आप जान लें कि लहरों को समुद्र बनाती है, समुद्र लहर नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार हमें ईश्वर ने बनाया पर हम ईश्वर नहीं हो सकते, हमें उन्हें हर हाल में पाना है।

खाली मन में मनोवृत्तियों का वास, इसे ईश्वरीय प्रेम से भरना जरुरी

शरद संगम के चौथे दिन सही मनोवृत्ति द्वारा मनोदशाओं पर विजय कैसे प्राप्त करें, विषयक पर अपनी बातें रखते हुए ब्रह्मचारी आद्यानन्द ने कहा कि मनोवृत्तियां कार्मिक है और ये पूर्व की इच्छाएं हैं, जो मनोदशा के रुप में सामने आती है और इसे हमने खुद अपने कर्मों द्वारा प्राप्त किया है। ये असुरक्षा की भावना, वातावरण की नकारात्मकता, पसंद-नापसंद, खुश-नाखुश से प्रभावित होती है और जब हमने इस पर काबू पा लिया तो ये स्वतः नियंत्रित हो जाती है। आद्यानन्द ने कहा कि हमें यह समझना होगा कि ये संसार ड्रामा है और इसे ड्रामा के अलावा कुछ हम अलग न सोचे। उन्होंने कहा कि जैसे ही आपको गलत मनोवृत्तियां काबू में लेने की कोशिश करें, आप खुद को समझाएं कि आप शरीर नहीं आत्मा है, आप दिव्य है और आप प्रभावित नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि खाली मन में मनोवृत्तियां वास करती है, इसलिए मन को ईश्वरीय प्रेम से भरे रहे। ईश्वरीय प्रेम से खुद को निर्भय बनायें रखे, क्योंकि निर्भयता एक ऐसा चट्टान है, जिस पर आप एक बहुत सुंदर किला बना सकते हैं।